International Journal of Education and Science Research Review
Volume-2, Issue-2 April- 2015 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

माध्यममिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

Sunita Nehara
Research Scholar
JJT University, Jhunjhunu Rajasthan

सार :
शिक्षा एक स्वभाविक व सहज प्रक्रिया है। जो जन्म से मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। माँ के गर्भ से ही बालक की शिक्षा शुरू हो जाती है जो मृत्यु तक चलती रहती है। वातावरण के अनुकूल स्वयं को ढालना ही शिक्षा है। इससे बालक के स्वभाविक विकास में सहायता मिलती है। हमें ऐसी शिक्षा और निर्देशन की आवश्यकता है, जो हमें जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त विकसित होने में सहायता दे। शिक्षा सामाजिक राष्ट्रीय तथा नैतिक विकास का अत्यन्त प्रभावशाली तथा उपयोगी साधन है। बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए उचित वातावरण, उचित शिक्षा व पोष्टिक भोजन एवक अनिवार्य शर्त है। प्रत्येक बालक के माता–पिता का मुख्य उद्देश्य होता है, अपने बच्चों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना। अतः ग्रामीण अभिभावक भी इस शोध पेपरों के परिणामों से लाभ उठाकर अपने बच्चों की हीन भावना, कार्य उपेक्षा व निम्न शैक्षिक उपलब्धि आदि समस्याओं को अपने पारिवारिक वातावरण के प्रभाव से आसानी से सुलझा सकते हैं और शहरी बालकों की तरह अपने बच्चों का विकास कर सकते हैं।

प्रस्तावनाः
प्राचीन समय में भारत में शिक्षा का विशेष महत्व था। समाज का एक बड़ा वर्ग शिक्षा की इस सुविधा से लाभान्वित हो रहा था। उस समय में शिक्षा व्यवसाय के रूप में प्रचलित नहीं थी। समाज में शिक्षक को सम्मानजनक सामाजिक पद प्राप्त था। उस समय शिक्षक छात्रों द्वारा पिता के समान आदरणीय थे तथा शिक्षक भी शिक्षार्थियों से पुत्र के समान स्नेह करते थे। शिक्षक के सामान्य सिद्धान्त थे–उच्च विचार, सादा जीवन, व्यक्तिगत भेदों का सम्मान, बौद्धिक स्वतंत्रता। सामाजिक परिवर्तनों के अनुरूप भारत में बौद्धकाल, मुस्लिम काल तथा ब्रिटिश काल में शिक्षा को भी अनेक परिवर्तनों का सामना करना पड़ा। स्वतन्त्रता पश्चात् भारत में शिक्षा के गिरते स्तर की ओर विशेष ध्यान दिया। कोठारी आयोग समेत अनेक आयोगों तथा नयी शिक्षा नीति 1986 और उसके विभिन्न संस्कारों ने मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया। मूल्य अपने आप में धर्म से इतर और किसी देश की विचारधारा के आधार होते हैं। चूंकि आज किसी की कोई विचारधारा नहीं है, इसलिए हो सकता है, कि देश अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहे। हमारा समाज विभिन्न प्रकार के धर्मों तथा संस्कृतियों पर आधारित एक विभिन्नता पूर्वक समाज है, इसलिए हमें ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए जो सबको स्वीकार्य हो। ये शिक्षा एकता में मद्दगार होनी चाहिए। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो हमारी राष्ट्र धरोहर व सर्वभौमिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो।

स्वतन्त्रता पश्चात् भारत में शिक्षा के गिरते स्तर की ओर विशेष ध्यान दिया। कोठारी आयोग समेत अनेक आयोगों तथा नयी शिक्षा नीति 1986 और उसके विभिन्न संस्कारों ने मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया। मूल्य अपने आप में धर्म से इतर और किसी देश की विचारधारा के आधार होते हैं। चूंकि आज किसी की कोई विचारधारा नहीं है, इसलिए हो सकता है, कि देश अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहे। हमारा समाज विभिन्न प्रकार के धर्मों तथा संस्कृतियों पर आधारित एक विभिन्नता पूर्वक समाज है, इसलिए हमें ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए जो सबको स्वीकार्य हो। ये शिक्षा एकता में मद्दगार होनी चाहिए। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो हमारी राष्ट्र धरोहर व सर्वभौमिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो।

आजादी के बाद भारतीय शिक्षा और विद्यालय स्तर की शिक्षा की दुःखद स्थिति के कारण शिक्षा में सुधार लाना तथा इस पर अधिक ध्यान देना केन्द्र तथा राज्य सरकारों का प्रमुख उद्देश्य रहा। अनेक आयोगों तथा समितियों ने शिक्षा की समस्याओं की समीक्षा की और शिक्षा को नव जीवन देने के लिए राष्ट्रीय नीतियाँ तैयार की। विश्वविद्यालय आयोग 1948–1949 और माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–1953 की सिफारिशों को लागू करने के लिए अनेक कदम उठाये गये तीसरी पंचवर्षीय योजना में शिक्षक पुनःरचना को और भी जोर दिया गया तथा शिक्षा आयोग 1964–66 का गठन किया गया। कोठारी आयोग ने 1951–56 के दौरान शिक्षा में हुई प्रगति की समीक्षा की और इसमें सुधार की आवश्यकता स्पष्ट करते हुए अपने सुझाव प्रस्तुत किये इन सिफारिशों और प्रयासों के आधार पर 1968 में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वीकार की गयी। इस नीति को स्वीकार किये जाने के साथ देश में तथा सभी स्तरों पर शैक्षिक सुविधाओं का प्रसार शुरू हुआ। जिसके फलस्वरूप शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि ''समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरंतर कमी तथा बढ़ते हुए सनकीपन के कारण पाठ्यक्रम में तथा शिक्षा व्यवस्था में समयानुसार परिवर्तन आवश्यक

हो गया है, ताकि शिक्षा द्वारा सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके। बालक के व्यक्तित्व में प्राकृतिक तथा वातावरण दोनों गुणों का समावेश होता है। अतः बालक की जन्मजात योग्यताओं के अलावा परिवेश वातावरण भी बालक के विकास को प्रभावित करने का एक महत्वपूर्ण कारक है।

वर्तमान समय में अनेक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक असीम जिज्ञासा भरे ओजस्वी मस्तिष्क को ततृप्त और विकसित करने के लिए स्वस्थ शैक्षिक पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण आवश्यक है। यद्यपि आज शिक्षा की समान रचना के लिए राष्ट्रीय प्रयास जारी है 10+2+3 की शैक्षिक रचना को लगभग पूरे देश में स्वीकार किया गया है इसके अतिरिक्त सामान्य पाठ्यचर्या तथा शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान करने का प्रयास जारी है। लेकिन इन सबकी समानताओं के बाद भी शैक्षिक विभिन्नता मौजूद है विशेषकर ग्रामीण तथा शहरी वातावरण में भी।

बालक को जो भी वातावरण से प्राप्त होता है उसका प्रभाव बालक के आत्मप्रत्यय व शैक्षिक उपलब्धियों पर भी पड़ता है।

शैक्षिक उपलब्धि:—

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से छात्रों के व्यवहार में संशोधन करने का प्रयास किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। छात्र शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में किस सीमा तक सफल हुए हैं। यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यता का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि का सूचक है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान कौशल आदि योग्यता की मात्रा से है। शैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है, शैक्षिक तथा उपलब्धि। विद्यार्थियों में प्राप्त होने वाली शैक्षिक उपलब्धि के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है।

फ्रिमैन के अनुसार ''एक विषय विशेष या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में छात्रों के ज्ञान, समझ एवं कौशल की उपलब्धि ही शैक्षिक उपलब्धि है।''

सुपर के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि विद्यार्थियों में शिक्षण के उपरान्त क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भलीभाँति प्रकार कर लेता है।

शैक्षिक उपलब्धि से यह तात्पर्य एक निश्चित समय अवधि में विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषय विशेष या विभिन्न विषयों में प्राप्तांकों से किया जाता है। यदि कोई विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि में उच्च स्थान दिया जाता है। जबकि इसके विपरीत कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को निम्न श्रेणी में स्थान दिया जायेगा। इस प्रकार किसी विषय में या विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों में शैक्षिक उन्नति ही बालक की शैक्षिक उपलब्धि है।

परिणाम :

ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की उपलब्धि की तुलना करने के लिये एकत्र किये गये आँकड़ों के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी—मूल्य की गणना की गई है, जिनका सारांश निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका नं०—1
ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य 'शैक्षिक उपलब्धि' पर अन्तर की सार्थकता

	ग्रामीण छात्रायें (छत्र100)		शहरी छात्रायें (छत्र100)		टी—मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
शैक्षिक उपलब्धि	282.00	60.82	334.37	57.32	10.855

.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत तालिका से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य शैक्षिक उपलब्धि पर टी—मूल्य (10.855) है। जो सार्थकता के दोनों स्तरों .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से अधिक है। इस प्रकार परिकल्पना नम्बर 2 कि ''ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मध्य शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकृत हुई। तत्पश्चात् तालिका में प्रदर्शित मध्यमानों का अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान (334.37) ग्रामीण छात्राओं के मध्यमान (282.0) से अधिक है। इससे यह ज्ञात होता है कि शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्र की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है।

निष्कर्ष :

बालक का व्यक्तित्व उसके वंशानुक्रम तथा उसके वातावरण से प्रभावित है तथा बालक उन्हीं व्यवहारों को ग्रहण करने की कोशिश करता है, जिसका वह अपने वातावरण में निरीक्षण करता है। बालक के जो पारिवारिक वातावरण उपलब्ध होता है, उनका प्रभाव उसके आत्मप्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में उसके माता–पिता तथा अन्य कारकों का भी विशेष महत्व होता है। यदि अभिभावक बालक के सर्वांगीण विकास पर ध्यान नहीं देते हैं, तो बालक अन्य बालकों की तुलना में शिक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी पिछड़ने लगता है। आज का बालक राष्ट्र के भविष्य का निर्माता होगा। अतः बालक को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाये जिससे बालक के सम्पूर्ण अभिक्षमताओं का पूर्ण विकास हो सके।

इस शोध पेपर के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है, कि कैसे वातावरण में बालक का पूर्ण विकास हो सकता है। शोध पेपर के अध्ययन से हम ये जान सकते हैं, कि ग्रामीण वातावरण के वे कौन–कौन से पक्ष हैं, जो इन दोनों में अन्तर पैदा करते हैं। इस शोध के परिणाम से माता–पिता अपने बच्चों की हीन भावना नकारात्मक अभिवृत्ति, कम शैक्षिक उपलब्धि आदि समस्याओं का स्वस्थ पारिवारिक वातावरण उपलब्ध कराकर दूर कर सकते हैं। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए भी यह अध्ययन अति उपादेय सिद्ध होगा, क्योंकि वर्तमान समय में सभी महाविद्यालयों, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद तथासमाज, अध्यापक से केवल यही आशा करते हैं कि वह बालक को केवल सूचनात्मक ज्ञान न दें बल्कि छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पहचान कर उसकी मानसिक तथा सामाजिक योग्यताओं का विकास करें। वर्तमान समय प्रतियोगिता का समय है, ऐसी स्थिति में ग्रामीण अभिभावक भी शहरी अभिभावक की तरह अपने बच्चों के भविष्य के प्रति चिन्हित है। इस शोध पेपर के द्वारा यह देखा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कौन–कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध करायी जायें, जिससे ग्रामीण बालकों का विकास भी शहरी बालकों की भाँति हो सकें। माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य भी इस शोध पेपर के परिणामों से लाभ उठा सकते हैं, तथा इसका निर्धारण कर सकते हैं, कि वे अपने अधीनस्थ अध्यापकों को क्या–क्या सुविधा दी जाऐं, जिससे कि वह अपने छात्रों का सम्पूर्ण विकास कर सकें।

संदर्भ गन्थ सूची :

1. पानीग्राही, एम०आर०, 2005 :एकेडमिक एचीवमेन्ट इन रिलेशन टू इंटेलीजेन्स एण्ड सोश्यो इकोनोमिक स्टेट्स ऑफ हिन्दी ऑफ स्टूडैन्ट एजूकेशन
2. पाण्डा, एम०, 2009 :कोरिलेशन बिटविन एकेडमिक एचीवमेन्ट एण्ड इंटेलीजेन्ट ऑफ क्लास 9 स्टूडेन्ट्स एजूटैक
3. पाल एण्ड खान, 2011 :इण्डियन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च
4. बाला सुब्रामनियम, एन०, 2008 :ए स्टडी प्यूपिल्स एकेडमिक अचीवमेन्ट इन इंग्लिश इन रिलेशन टू देयर इंटेलीजेन्स
5. रमइया, एल०, 2008 :ए रिलेशनल स्टडी ऑफ पैरेन्ट इन्वाल्वमेन्ट ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ स्टैण्डर्ड ऑफ स्टूडेन्ट्स इन देवकोट्टाई डिस्ट्रिक्ट
6. सोतेलो, एम०जे०, 2006 : सैक्स डिफ्रेंस इन सेल्फ कान्सैप्ट इन सैकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स
7. शाह, जे०एच०, 2012 :ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप एमंग इंटेलीजेन्स, सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ प्यूपिल्स ऑफ स्टैण्डर्ड ऑफ सेमी अर्बन एण्ड रूरल एरियाज ऑफ सिहोर तालुका
8. जैन, जयन्ती आर०, 2014 :ए स्टडी ऑफ द सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ एडोलिसेन्ट गर्ल्स एण्ड आइडेन्टिफिकेशन विथ पैरेन्ट एण्ड पैरेन्ट सबस्टीट्यूट्स एज कान्ट्रीब्यूटिंग टू रियलाइजेशन ऑफ एकेडमिक गोल्स, पी–एच.डी. एजूकेशन, नागपुर यूनिवर्सिटी
9. तामपुरट्टि, एन०आर०, 2011 :सोशियो इकानामिक स्टेट्स ऑफ क्रियेटिव हाई अचीवर्स एण्ड क्रियेटिव लो अचीवर्स इन मैथमैटिक्स